

इतंत्रचर के तीन मान (values) होंगे और प्रत्येक मान के अन्तर्गत एक एक समूह कागहन रहेगा। प्रयोगों को इन तीन समूहों में आवंटन या वृच्छिक रूप से किया जाता है। इसके पश्चात् तीन समूहों की माप आश्रित चर की जायेगी (0, 0₁, 0₂, 0₃) इसके बाद इन तीन समूहों का आश्रित चर का के प्राप्ती का माध्य ज्ञात कर उसकी साधकता की जॉन्स F टेस्ट द्वारा की जाती है।

- (b) या वृच्छिक कृत - एनी कड एक मार्गीय एनीका डिजाइन Randomized blocked design या NOVADesign या वृच्छिक कृत एनी कड एक मार्गीय एनीका डिजाइन भी या वृच्छिक कृत एक मार्गीय एनीका के समान ही एक समूह डिजाइन है। दोनों में अन्तर्गत ही है कि या वृच्छिक कृत एक मार्गीय एनीका डिजाइन में पहिरंग चरों का नियंत्रण मात्र या वृच्छिक कृत विधि द्वारा किया जाता है, जब कि इस या वृच्छिक कृत एनी कड एक मार्गीय एनीका डिजाइन में पहिरंग चरों का नियंत्रण या वृच्छिक कृत के साथ-साथ स्थिरता दोनों द्वारा की जाती है। इस डिजाइन की स्वाशियत यह है कि इसमें प्रयोगों को जीव संख्या से या वृच्छिक रूप से चयन करके उस उस पहिरंग चर (extraneous variables) पर समान पना बिना जाता है जो आश्रित चर (DV) को सीधे प्रभावित कर सकता है। इस प्रक्रिया को एनी कड कहा जाता है। इसके पश्चात् पुनः प्रयोगों को विभिन्न प्रयोगात्मक समूहों में या वृच्छिक कृत विभाजित या आवंटन कर दिया जाता है प्रत्येक समूह को विवेकन मान 'X' दिया जाता है। इसके पश्चात् उस पर 'X' विवेकन या स्वतंत्र चर का प्रभाव का मापन किया जाता है। सांकेतिक रूप में इस डिजाइन का निम्नपत्र प्रस्तुत किया जाता है -

RB X₁ O₁

RB X₂ O₂

RB X₃ O₃

उपर्युक्त डिजाइन से स्पष्ट है कि हमारे तीन समूहों में निर्देश दिए गए X तथा O दिखलाया गया है। समूहों की संख्या तीन से अधिक भी हो सकती है। इसके पश्चात् F टैबल बना भेद डाल कर लिखा जाता है कि O₁, O₂, और O₃ के बीच साधक अन्त है या नहीं। तत्पश्चात् निष्कर्ष पर शोधार्थी पहुँचना है।

(6) या इच्छा कृत-कारक गुणित डिजाइन (Ramdomized factorial design)

इस डिजाइन को प्रयोगात्मक सभी डिजाइनों में आधक गुणित माना गया है। या इच्छा कृत कारक गुणित डिजाइन को सहारा उस परिस्थिति में लिखा जाता है जहाँ शोधार्थी एक ही साधक है या दो से अधिक स्वतंत्र चरों (F) के प्रभाव का अध्ययन करने की इच्छा रखता है। साथ ही साथ अन्त-क्रिया के फलस्वरूप पडने वाले प्रभावों का भी अध्ययन करना चाहता है। जब किसी डिजाइन में दो स्वतंत्र चरों का एक साथ अध्ययन किया जाता है, तो इसे द्वि-कारक गुणित डिजाइन की संज्ञा दी जाती है। इसी प्रकार दो से अधिक स्वतंत्र चरों का एक साथ अध्ययन किया जाता है, तो उसे त्रि-कारक गुणित आदि की संज्ञा दी जाती है। कारक गुणित डिजाइन दो किन्हीं (विभिन्न-स्तरों) के आधा पर परिवर्तित होते हैं- स्वतंत्र चर की संख्या तथा प्रत्येक स्वतंत्र चर की संख्या। यदि किसी प्रयोग में दो स्वतंत्र चर हैं और दोनों के स्तर दो हैं, तो उसे 2x2 कारक गुणित डिजाइन कहा जाता है। इसी प्रकार स्वतंत्र चरों की संख्या एवं स्तरों के आधार पर 3x3, 3x3x3 आदि कारक गुणित डिजाइन कहा जाता है।